सुरेन्द्र मोहन पाठक

तीन दिन

थ्रिलर

तीन दिन

(थ्रिलर)

Surender Mohan Pathak

First Edition: 1986
Copyright: Surender Mohan Pathak 2014
Author Website: www.smpathak.com
Author e-mail: contact@smpathak.com

प्राक्कथन

ओरियण्टल शिपिंग कारपोरेशन के विशाल एवं अत्यन्त वैभवशाली यात्रीवाहक जहाज सिल्वर स्टार को बम्बई की बन्दरगाह पर लगे एक घण्टा हो चुका था जब कि राहुल ने डैक पर कदम रखा। लगभग सभी यात्री सैर सपाटे के लिये जहाज पर से कूच कर चुके थे। जहाज के क्रियू के सदस्य भी कुछ जा चुके थे और कुछ जाने की तैयारी कर रहे थे।

जो अभी नहीं गये थे, उनमें से एक जहाज का पर्सर राहुल था।

राहुल एक छः फुट से भी निकलते कद का खूब मोटा व्यक्ति था। वह अभी केवल अट्ठाईस साल का था लेकिन वजन में वह एक क्विंटल से भी ज्यादा था। उसके विशाल आकार की वजह से ही लोग उसे राहुल रामचन्दानी कहने की जगह राहुल रोडरोलर कहते थे, अलबत्ता उसके मुंह पर ऐसा कहने की हिम्मत किसी की नहीं होती थी।

थोड़ी देर पहले बारिश होकर हटी थी जिसकी वजह से बाहर ठण्डी हवा चल रही थी।

राहुल ने नथुने फुलाकर एक गहरी सांस ली और परे किनारे पर जगमग करती बम्बई शहर की रोशनियों की तरफ देखा।

बम्बई में वह पहली बार कदम रख रहा था।

उस क्षण वह जहाज की वर्दी, सफेद कमीज और सफेद पतलून पहने था। सिर पर वह सिल्वर स्टार के सुनहरे मोनोग्राम वाली पीक कैप पहने था। अपना नीला ओवरकोट वह अपनी बांह पर डालकर डैक पर पहुंचा था लेकिन वातावरण की ठण्डक को महसूस करते हुए उसने ओवरकोट पहन लिया।

उसने डैक पर दायें-बायें निगाह दौड़ाई।

जहाज का पुर्तगाली कैप्टन रेलिंग के सहारे खड़ा एक सम्पन्न पैसेन्जर से बातें कर रहा था।

राहुल उसके करीब से होता हुआ गैंगवे की तरफ बढा तो कैप्टन ने उसे नाम लेकर पुकारा।

राहुल ठिठका, घूमा और फिर लम्बे डग भरता हुआ कैप्टन के करीब पहुंचा।

“तीन दिन।” - कैप्टन अपनी तीन उंगलियां उठाकर उसे दिखाता हुआ बोला - “सिर्फ तीन दिन रुकने वाला है हमारा जहाज इस बन्दरगाह पर।”

“मुझे मालूम है।” - राहुल बड़े अदब से बोला।

“अभी मालूम है। लेकिन विस्की का गिलास हाथ आते ही सब भूल जाओगे।”

“ऐसा नहीं होगा, सर।”

“आज मंगलवार है। शुक्रवार शाम को सात बजे जहाज यहां से कराची के लिये रवाना हो जायेगा। उससे पहले तुमने यहां वापिस ड्यूटी पर होना है।”

“यस, सर।”

“इस बार मैं तुम्हारा इन्तजार नहीं करने वाला। इसलिये दिन और वक्त याद रखना।”

“यस, सर।”

“आइन्दा तीन दिन तुम शराब पीते हो या उसमें गोते लगाते हो, यह तुम्हारा जाती मामला है। वैसे चाहो तो तजुर्बे के तौर पर इन दोनों बातों में कभी फर्क महसूस करके देखना।”

“किन दो बातों में?”

“शराब पीने में और उसमें गोते लगाने में।”

“यस, सर।”

“फ्राइडे ईवनिंग। सैवन पी. एम। शार्प।”

“यस, सर।”

कैप्टन को खामोश हो गया पाकर राहुल फिर गैंगवे की तरफ बढ गया।

कैप्टन कुछ क्षण राहुल को देखता रहा और फिर समीप खड़े पैसेन्जर की तरफ घूमा।

“यह लड़का” - कैप्टन बोला - “जब जहाज पर होता है तो विस्की को हाथ तक नहीं लगाता, लेकिन जहाज बन्दरगाह पर पहुंचा नहीं, खुश्की पर इसके पांव पड़े नहीं कि इसका विस्की में डूबने-उतराने का प्रोग्राम शुरू।”

“यह तो आपके लिये अक्सर मुसीबत खड़ी कर देता होगा।” - पैसेन्जर बोला।

“जहाज पर नहीं करता। जहाज पर तो इससे ज्यादा मुस्तैद, फर्माबरदार और जिम्मेदार आदमी ढूंढना मुहाल है। हालांकि काम करना इसके लिये कतई जरूरी नहीं लेकिन फिर भी जहाज पर यह पूरी मेहनत, लगन और

ईमानदारी से काम करता है।"

"काम करना जरूरी क्यों नहीं इसके लिये ?"

कैप्टन एक क्षण ठिठका और फिर बोला - "ग्रैगरी साहब, आप हमारे रेगुलर पैट्रन हैं इसलिये मैं आपको एक राज की बात बताता हूं।"

"क्या ?" - पैसेन्जर उत्सुक भाव से बोला।

"यह लड़का, जो इस जहाज पर बतौर पर्सर नियुक्त है, हकीकतन इस जहाज के और ओरियन्टल शिपिंग कारपोरेशन के मालिक कृपाल रामचन्दानी का इकलौता बेटा है।"

"क्या !"

"जी हां। यानी कि हकीकतन मैं इसका नहीं, यह मेरा बॉस है। यह मेरा एम्पलायर है।"

"कमाल है ! यह यहां बतौर पर्सर काम करता है, इसके बाप को एतराज नहीं ?"

"बाप को मालूम हो तो जरूर एतराज होगा।"

"कैप्टन, वाट इज दि स्टोरी ?"

"लड़का इश्क में खता खाया हुआ है। किसी लड़की ने ऐसा दिल तोड़ा इसका कि यह जान दे देना चाहता था। मेरे समझाने पर खुदकुशी का हौलनाक इरादा तो इसने अपने जेहन से निकाल दिया था लेकिन सुकून हासिल नहीं था इसे और लन्दन में - जहां कि ओरियण्टल शिपिंग कारपोरेशन का हैडक्वार्टर है, जहां कि यह अपने मां-बाप के साथ रहता था और जहां कि पूनम नाम की वह बेवफा लड़की भी रहती है - इसे सुकून हासिल हो भी नहीं सकता था। इसी ने ख्वाहिश जाहिर की थी कि मैं इसे जहाज पर अपने साथ ले चलूं लेकिन इसके बाप को खबर न होने दूं। नतीजतन एक अरबपति बाप का बेटा, इस जहाज का मालिक, यहां पर्सर की नौकरी करता है।"

"और अपने टूटे दिल को शराब के नशे से जोड़ने की कोशिश करता है ?"

"हमेशा नहीं। जहाज जब सफर में होता है तो यहां की रौनक में इसका दिल लगा रहता है। जहाज बन्दरगाह पर लगता है तो खाली हो जाता है। तब यह नार्मल नहीं रह पाती। फिर इसके कदम पड़ते हैं बन्दरगाह पर। फिर होती है बोतल इसके हाथ में और यह बोतल में।"

"इसके बाप को तलाश तो होगी इसकी ?"

"जरूर होगी। आखिर यह अपने बाप की इकलौती औलाद है, उसका वारिस है।"

"आपका फर्ज नहीं बनता कि आप बाप को इसके बारे में खबर करें।"

"बनता है लेकिन मेरा वैसा ही फर्ज इसके लिये भी बनता है। मैंने राहुल से वादा किया है कि इसके बारे में इसके बाप को खबर नहीं करूंगा।"

"आई सी। आप इसे वक्त पर लौटने की वार्निंग दे रहे थे और कह रहे थे कि इस बार आप इसका इन्तजार नहीं करने वाले !"

"हां। यह लेट हो जाता है तो मुझे जहाज लेट करना पड़ता है, जिसकी वजह से पैसेन्जर खफा हो सकते हैं। कभी किसी पैसेन्जर ने इस बात की शिकायत कर दी तो मेरी नौकरी पर आ बनेगी। यह एक लग्जरी शिप है जिस पर आपकी तरह केवल वी. आई. पी. ही सफर करते है। लड़के का वक्त पर यहां न पहुंचता कभी मेरे लिये कोई मुसीबत खड़ी कर सकता है।"

"नशे में यह कतई भूल जाता है कि इसने वापिस लौटना है ?"

"नहीं, यह बात तो यह बाखूबी याद रखता है। दो-तीन घण्टे से ज्यादा लेट नहीं होता यह।"

"लेकिन लेट होता जरूर है।"

"अभी तक तो ऐसा ही चल रहा है। सिर्फ एक बार, जापान में, यह वक्त पर पहुंचा था।"

"दिल क्यों टूटा इसका ?"

"यह मुझे नहीं मालूम। मेरे पूछने पर भी उस लड़की की स्टोरी सुनाने को यह तैयार नहीं होता जिसने इसका दिल तोड़ा है।"

"अजीब बात है।"

"अजीब भी और गैरमामूली भी। वह खुद भी तो ऐसा ही है। ही इज ए वैरी अनयूजुअल कैरेक्टर।"

"यस। वैरी अनयूजुअल कैरेक्टर इनडीड।"

***

हालांकि राहुल बाखूबी अफोर्ड कर सकता था लेकिन फिर भी ड्रिंक के लिये वह कभी किसी ऊंचे दर्जे के बार में

नहीं जाता था। अपनी शराबखोरी के लिये वह हमेशा किसी सैकेण्ड क्लास या थर्ड क्लास बार को चुनता था और ऐसा बार अपरिचित शहर में भी तलाश करने में उसे कोई दिक्कत नहीं होती थी। अब तक वह बाखूबी जान चुका था कि हर बन्दरगाह के इलाके में ऐसे बार और वेश्यालय बहुतायत में होते थे। ऐसी किसी जगह के बारे में उसे कभी किसी से पूछने की भी जरूरत नहीं पड़ती थी।

ऐसा एक बार डिमेलो रोड पर वह तलाश कर भी चुका था।

उस बार का नाम प्रिंसेस बार था और उस वक्त वह ग्राहकों से खचाखच भरा हुआ था। सिगरेट के धुंए और शोर-शराबे से वह पूरी तरह से रचा बसा हुआ था।

उससे पहले राहुल ग्राहम रोड पर स्थित एक बार में गया था लेकिन वहां उसका मन नहीं लगा था और वह सिर्फ दो पैग पीकर ही वहां से कूच कर गया था।

प्रिंसेस बार उसकी पसन्द की जगह निकली थी। चेतना पर हावी हो जाने वाला शोर-शराबा। तनहाई का दुश्मन हुजूम। किसी गम, किसी याद को घोलकर पी जाने के लिये हासिल शराब।

कोई छ: पैग विस्की वह वहां पी चुका था।

भयंकर नशे की तरफ वह निरन्तर अग्रसर हो रहा था लेकिन फिर भी उसको सिर्फ देखकर यह कहना मुहाल था कि वह नशे में था, अलबत्ता उसकी आंखें उसकी नशे की हालत की चुगली कर जाती थीं, जिनमें कि सामने वाले को लगता था कि वह उसे देखते हुए भी नहीं देख रहा था।

शराब को राहुल बिना चखे, बिना उसका कोई आनन्द उठाये, पीता था। उसके सामने जाम आता था, वह उसे उठाकर खाली कर देता था, नया जाम आता था तो वह उसे खाली कर देता था, नहीं आता था तो वह चुपचाप बैठा जाम सर्व होने की प्रतीक्षा करता रहता था। आखिर उसे जल्दी क्या थी। कम से कम तीन दिन तो उसके पास हर बन्दरगाह पर होते थे और उन दिनों में शराब पीने के अलावा उसने और करना क्या होता था।

राहुल के बगल की मेज पर दो आदमी किसी बात पर बहस कर रहे थे। कभी-कभार वे उत्तेजित हो उठते थे तो ऊंचा-ऊंचा बोलने लगते थे। ऐसे एक अवसर पर उनकी आवाज से आकर्षित होकर राहुल ने उनकी तरफ देखा था तो पाया था कि एक भारी-भरकम लेकिन ठिगना सा मराठा था और दूसरा दुबला-पतला, बांस-सा लम्बा, गोवानी था। दोनों चालीस के पेटे में थे। उनके वार्तालाप के कुछ टुकड़ों को सुनकर ही राहुल ने जाना था कि गोवानी का नाम रोबीरो था और मराठे का नाम मारुतिराव था।

"मोटे, तू मूर्ख है।" - एक बार उसने गोवानी को गुस्से में कहते सुना - "साले, अभी सिर्फ हमें मालूम है कि धोते मटका एजेन्ट होने के साथ-साथ 'गुरुजी' का सप्लायर बन गया है और ढाई-तीन लाख रुपये का माल हमेशा अपने पास अपनी जेब में रखता है। अभी मौका सिर्फ हमारे हाथ में है, बाद में औरों को भी खबर लग गई तो कोई भी उसका गला काटकर माल झपट लेगा।"

"वह 'कम्पनी' का आदमी है।" - मारुतिराव बोला।

"सिर्फ मटके के मामले में। 'गुरुजी' का धन्धा उसका अपना है। हम मटके के माल को हाथ नहीं लगायेंगे तो 'कम्पनी' का कहर कभी हम पर नाजिल नहीं हो पायेगा।"

"आज नम्बर कौन-सा लगा ?"

"सान्ता मारिया !" - गोवानी असहाय भाव से बोला - "अरे मैं तुझे उत्तर की बात समझा रहा हूं और तू दक्षिण की बात कर रहा है। क्या लगाया था मटके पर तूने ?"

"बीस रुपया।"

"लानत ! साले, मोटे, नम्बर लग भी गया होगा तो क्या मिलेगा तुझे ?"

"सौलह सौ !"

"और मैं जो तुझे डेढ लाख का रास्ता दिखा रहा हूं !"

"भाई साहब" - एकाएक राहुल उनकी तरफ झुकता हुआ बोला - "मटका कहां लगता है ?"

दोनों ने चौंककर उसकी तरफ देखा।

"मैं परदेसी हूं" - राहुल विनयशील स्वर में बोला - "लेकिन मैंने बम्बई के मटके का बहुत नाम सुना है। सुना है नम्बर रोज निकलता है।"

"हां।" - मारुतिराव के मुंह से निकला।

"मैं तीन दिन यहां हूं। मैं भी मटका खेलना चाहता हूं। अब कब निकलेगा नम्बर ?"

"कल शाम को।"

"मैं दांव लगाना चाहता हूं।"
"कितने रुपये का ?"
"सौ रुपये का।"
"बस ?"
"हां। मैं तो यूं ही खेल-खेल में ऐसा करना चाहता हूं।"
"लेकिन अगर तुम दांव ज्यादा लगाओ तो...."
"बाहर सड़क पर" - एकाएक गोवानी बीच में बोल पड़ा - "बार से थोड़ी ही दूर एक बनारसी पान वाले की दुकान है, वहां पहुंच जाओ।"
"लेकिन..."
"अब अपना काम करो।" - गोवानी सख्ती से बोला।
"ठीक है।" - राहुल तनिक आहत भाव से बोला और फिर उसने उनकी तरफ से पीठ फेर ली।
वह फिर अपनी शराबखोरी में मशगूल हो गया।
और कई पैग पी चुकने के बाद उसे बनारसी पान वाले का दोबारा ख्याल आया।
वह अपने स्थान से उठा और झूमता हुआ बार से बाहर निकल गया।
तब तक लगभग बारह बज चुके थे और बार की भीड़ काफी छंट चुकी थी। मराठा और गोवानी उसे वक्त भी बार में बैठे थे लेकिन उस वक्त वे एक तीसरे आदमी के साथ सिर से सिर जोड़े बातें कर रहे थे। तीसरा आदमी कोई पैंतालीस साल का मोटा थुलथल-सा व्यक्ति था।
राहुल बार से बाहर निकला।
बार के प्रवेश द्वार के पास ही एक टेलीफोन बूथ था जिसके भीतर उस समय एक नौजवान लड़की मौजूद थी और कहीं टेलीफोन करने की कोशिश में डायल घुमा रही थी। बार की इकलौती सीढी उतरते समय राहुल लड़खड़ाया। अपने आपको सम्भालने के लिए उसने बूथ का सहारा लिया तो उसके वजन से त्रस्त लकड़ी का बूथ सारे का सारा हिल गया। युवती ने हड़बड़ा कर उसकी तरफ देखा।
"स... सारी।" - राहुल बिना युवती की तरफ निगाह उठाए होंठो में बुदबुदाया और बूथ का सहारा छोड़कर सड़क पर आगे बढ गया।
अपनी तरफ से वह बनारसी पान वाले की तलाश में बार से बाहर निकला था लेकिन उस वक्त वह नशे में इतना धुत्त हो चुका था कि वह सिर्फ इतना जानता था कि वह चल रहा था, उसे यह नहीं मालूम था कि वह कहां जा रहा था। उसे यह याद तक नहीं रहा था कि बार से बाहर वह मटका लगाने की नीयत से बनारसी पान वाले की तलाश में निकला था।
बूथ में मौजूद लड़की का नम्बर मिल गया तो वह माउथपीस में बोली - "हल्लो, अशोक। मैं वर्षा बोल रही हूं।"
"वर्षा !" - दूसरी ओर से आवाज आयी - "इस वक्त कहां से बोल रही हो ?"
"डिमेलो रोड से। आज एक इमरजेंसी आपरेशन की वजह से रुकना पड़ गया था। अब लौटने में दिक्कत आ रही है। हस्पताल में गाड़ी उपलब्ध नहीं थी। मैं टैक्सी पर सवार होने की नीयत से वहां से चल पड़ी थी लेकिन अब मुझे कोई टैक्सी भी नहीं मिल रही। शुक्र है कि फोन पर तुम मिल गये हो। अब बराय मेहरबानी तुम अपनी कार पर यहां आकर मुझे ले जाओ।"
"तुम हस्पताल में ही फोन कर देती मुझे।"
"हस्पताल का फोन खराब था।"
"अच्छा हस्पताल है जिसमें न वक्त पर गाड़ी हासिल है और न फोन..."
"तुम आ रहे हो ?"
"हां। और क्या नहीं आऊंगा ?"
"शुक्रिया।"
"डिमेलो रोड पर तुम हो कहां ?"
"प्रिंसेस बार के सामने के टेलीफोन बूथ में।"
"वर्षा, तुम ऐसा करो, बार के सामने ही मैंगलोर स्ट्रीट है, तुम उस गली को पार करके निकोल रोड पर आ जाओ।"

"वहां क्यों ?"

"क्योंकि डिमेलो रोड पर आजकल सड़क मरम्मत के लिए रास्ता बन्द है। वहां दूसरी तरफ से पहुंचने के लिए मुझे बहुत लम्बा चक्कर काट कर आना पड़ेगा। मिंट रोड के सिरे तक जाना पड़ेगा मुझे। तुम वह जरा-सी गली पार करके निकोल रोड पर आ जाओगी तो हम जल्दी घर पहुंच जायेंगे। जितनी देर में तुम गली पार करोगी, उतनी देर में मैं भी वहां पहुंच जाऊंगा।"

"ठीक है।"

"मुझे निकोल रोड पर मैंगलोर स्ट्रीट के दहाने पर मिलना।"

"ओके।"

***

जनकराज धोते उस अक्ल के अन्धे मोटे थुलथुल आदमी का नाम था जिसके साधन तो मंगतों जैसे थे लेकिन जिसकी ख्वाहिशें दुनिया को फतह कर लेने के ख्वाहिशमन्द सिकन्दर से भी बढ़चढ़ कर थीं, जिसको मटके की एजेन्टी के धन्धे से सब्र नहीं था, जो हेरोइन की बिक्री के खतरनाक धन्धे में हाथ डाल बैठा था और जो नहीं जानता था कि वैसे खतरनाक धन्धे बिना मुनासिब सरपरस्ती के नहीं चलते थे। उसे 'कम्पनी' का प्यादा जानकर किसी ने ढाई-तीन लाख रुपये की हेरोईन का तो उसका एतबार कर लिया था लेकिन उसे किसी तरह की सरपरस्ती देने की कतई कोशिश नहीं की थी, अलबत्ता उसे यह जरूर बता दिया था कि उधार में मिली हेरोईन में या उस की कीमत में कोई घोटाला करने की सूरत में इसकी लाश छत्तीस टुकड़ों में बंटी अरब सागर में तैरती पायी जा सकती थी।

ऐसे ही आ बैल मुझे मार जैसी फितरत के व्यक्ति धोते को मारुतिराव और रोबीरो की जुगल जोड़ी ने यह भरोसा दिया था कि सिर्फ दो फीसदी की कमीशन पर वे उसे एक लाख रुपये की 'गुरुजी' के ग्राहक से मिलवा सकते थे।

प्रिंसेस बार में उनके साथ बैठे धोते ने फौरन वह आफर कबूल कर ली अपनी निगाह में यह कहकर भारी होशियारी दिखाई कि माल उनके पास नहीं था, वह ग्राहक से मिलेगा, वह उससे रकम हासिल करेगा और फिर माल लाकर देगा।

दोनों ने फौरन हामी भर दी।

अपनी मूर्खता के साथ-साथ धोते नशे के हवाले न होता तो आनन-फानन हुई उस हामी ने ही उसे चौकन्ना कर दिया होता।

वह सहर्ष ग्राहक से मुलाकात की खातिर उनके साथ चलने के लिए तैयार हो गया।

कत्ल के लिए मुनासिब जगह रोबीरो ने पहले ही चुनी हुई थी। मैंगलोर स्ट्रीट के सिरे पर एक तीन मंजिला इमारत थी जो कभी आतंकवादियों का अड्डा होती थी और जहां कभी गोला-बारूद तैयार किया जाता था। एक बार वहां मौजूद बारूद का भण्डार किसी प्रकार आग पकड़ गया था और आनन-फानन वह सारी इमारत खंडहर बन गई थी। इमारत की कुछ दीवारें अभी भी खड़ी थीं, कोई-कोई छत भी कांखती कराहती बरकरार थी लेकिन रहने लायक उसका कोई भी हिस्सा नहीं रहा था। दिन में इमारत के विशाल कम्पाउन्ड में बच्चे खेलने के लिए घुस जाते थे लेकिन रात को वह भूतों का डेरा ही बनकर रह जाती थी।

वह जगह रोबीरो ने कत्ल के लिए चुनी थी जहां कि, बकौल रोबीरो, कई दिन तक तो लाश का पता भी नहीं चलने वाला था।

धोते के दायें-बाये चलते हुए रोबीरो और मारुतिराव मैंगलोर स्ट्रीट में दाखिल हुए और उस खंडहर इमारत की तरफ बढ़े।

***

वर्षा मैंगलोर स्ट्रीट के मध्य में पहुंच गई तो उसे लगा कि वह गली का इकलौती राहगुजर नहीं थी। अपने पीछे से किसी के कदमों के आवाज उसे निरन्तर सुनाई दे रही था। उस सुनसान गली में उसके पीछे निश्चय ही कोई था।

कहीं वह उसी के पीछे तो नहीं आ रहा था। - वर्षा ने तनिक भयभीत होकर सोचा

उसने एक बार सावधानी से घूमकर अपने पीछे निगाह दौड़ाई तो उसे अन्धेरी गली में कोई दिखाई न दिया।

जरूर उसे पीछे घूमता पाकर वह किसी पेड़ के पीछे छुप गया था।

क्यों न वह भी थोड़ी देर के लिए कहीं छुप जाए और उसे गुजर जाने दे ?

लेकिन - उसने सिहर कर सोचा - अगर कोई उसी की फिराक में था तो वह भला यूं चुपचाप कैसे गुजर जाता गली में से !

उसने जल्दी-जल्दी गली पार कर जाना ही मुनासिब समझा।

उसके दोबारा चलना शुरू करते ही पीछे से कदमों की आहट फिर सुनाई देने लगी।

वह और भी भयभीत हो उठी। उसका जी चाहने लगा कि या तो वह जोर से चिल्ला पड़े और या वह एकदम वहां से भाग निकले। लेकिन उससे दोनों में कोई भी काम न किया। वह खामखाह् डर रही थी। - उसने अपने आपको तसल्ली दी - उस इलाके से वह पूरी तरह वाकिफ थी। राहजनी या बलात्कार की कोई घटना वहां हुई हो, ऐसा उसने कभी नहीं सुना था।

तो फिर वह भयभीत क्यों थी ?

भयभीत क्या, वह तो आतंकित थी और उसके सारे जिस्म में रह-रहकर ठण्डक की लहर दौड़ जाती थी।

बेमानी था उसका डरना। वह गली उसकी बपौती थोड़े ही थी। कोई भी उस रास्ते से गुजर सकता था।

लेकिन उसके ठिठकने पर पीछे से आती पदचाप बन्द क्यों हो गई थी ?

उसने एक बार फिर घूम कर पीछे देखा।

उसी क्षण पीछे आता व्यक्ति एक स्ट्रीट लाइट के नीचे से गुजारा।

वर्षा ने देखा कि वह एक हाथी जैसा विशालकाय व्यक्ति था।

उसके विशाल आकार और सिर की टोपी के अलावा वर्षा और कुछ न देख सकी क्योंकि तभी रोशनी उसके पीछे हो गई। रोशनी पीछे होती ही उसके विशाल शरीर का इतना लम्बा साया गली में बना कि उसके सिर की परछाई वर्षा को अपने जिस्म पर पड़ती लगी। वह घबराकर आगे बढ़ी।

तभी साया ठिठक गया।

उसकी जान में जान आई। इस बार साया उसके ठिठकने पर नहीं ठिठका था, बल्कि उसके आगे बढ़ने पर ठिठका था।

***

धोते को पूर्ववत् अपने बीच में चलाते हुए मारुतिराव और रोबीरो खंडरह इमारत के कम्पाउम्ड में दाखिल हुए।

कम्पाउन्ड पार करके जब वे इमारत के बरामदे में पहुंचे तो एकाएक धोते ठिठक गया।

तब उसे पहली बार महसूस हुआ कि जिस जगह वह लाया गया था, वह किसी सांप, छछूंदर, चिमगादड़ की रिहायश तो ही सकती थी, किसी इनसान के बच्चे की नहीं।

“यहां रोशनी क्यों नहीं है ?” - धोते सकपकाये स्वर में बोला।

“अभी हो जाएगी।” - रोबीरो आश्वासनपूर्ण स्वर में बोला और उसने उसे भीतर की तरफ धकेला।

“यह तुम कहां ले आए हो मुझे ?” - धोते अपनी बांह से उसका हाय झटकता हुआ बोला - “यहां कौन रहता है ?”

“ग्राहक।”

“कोई इस खंडहर में कैसे रह सकता है ?”

“वह यहां रहता नहीं है। उसने मिलने के लिये यह जगह मुकर्रर की गई है।”

“वह भीतर है ?” - धोते सन्दिग्ध भाव से बोला।

“हां।”

“मुझे तो नहीं लगता कि भीतर कोई हो।”

“वह पिछवाड़े में है।”

“उसे यहां बुलाओ।”

“आवाज देना मुनासिब नहीं होगा।”

“तो जाकर लेकर आओ। मैं भीतर नहीं जाने का।”

एकाएक धोते एक कदम पीछे हटा और वापिस घूमा।

मारुतिराव धोते एक कदम पीछे हटा और वापिस घूमा।

“मारुतिराव” - रोबीरो सांप का तरह फुंफकारा - “पकड़ हरामजादे को।”

मारुतिराव ने फौरन उसे दबोच लिया। उसका एक हाथ धोते के मुंह पर पड़ा और दूसरा उसकी थुलथुल कमर से लिपट गया। उसने अपना एक घुटना उसकी पीठ में धंसाया और उसे अपने साथ घसीटता हुआ इमारत के भीतर ले चला।

रोबीरो के हाथ में एक कोई फुट भर का लोहे का डण्डा प्रकट हुआ। वह छलांग मारकर उनके सामने पहुंचा। उसका डण्डे वाला हाथ हवा में उठा और फिर वह गाज की तरह धोते की खोपड़ी पर गिरा।

***

आगे निकोल रोड पर से वर्षा को किसी वाहन की आवाज नहीं आ रही थी। जाहिर था कि अशोक कार लेकर अभी वहां नहीं पहुंचा था।

सर्वत्र सन्नाटा छाया हुआ था। कहीं कोई आवाज नहीं थी।

सिवाय उन कदमों की आहट के जो वर्षा को अपने पीछे से फिर आने लगी थी।

पता नहीं यह हकीकत थी या उसका वहम था लेकिन वर्षा को ऐसा लगा जैसे इस बार पीछे आते व्यक्ति ने भी तेज-तेज चलना शुरू कर दिया हो।

तभी वह कोने की खंडहर इमारत के करीब पहुंची।

फिर एकाएक किसी अज्ञान भावना से प्रेरित होकर आगे बढ़ने के स्थान पर वह इमारत के कम्पाउन्ड के टूटे फाटक के भीतर दाखिल हो गई। दबे पांव वह इमारत के बरामदे तक पहुंची और स्तब्ध खड़ी पंजों के बल उचक कर बाहर गली में देखने लगी।

अगर उसके पीछे आता साया चुपचाप खंडहर इमारत के सामने से गुजर गया तो वह समझेगी कि जो कुछ सोच-सोचकर वह हलकान हुई जा रही थी, वह सब उसके दिमाग का खलल था।

साया गली में उसके सामने प्रकट हुआ।

वर्षा हड़बड़ाकर भीतर गलियारे में सरक गई। वह उसे बरामदे में खड़ी देख जो सकता था।

इमारत के सामने साया ठिठका।

वह सहम कर दो कदम पीछे हट गई।

साया अनिश्चित-सा गली में खड़ा आंधी में हिलते ताड़ के पेड़ की तरह झूम रहा था।

अगर वह इमारत में दाखिल हुआ - वर्षा ने फैसला किया - तो वह गला फाड़-फाड़कर चिल्लाने लगेगी।

तभी इमारत के भीतर कहीं हलकी-सी आहट हुई।

वर्षा को अपनी सांस रुकती सांस महसूस हुई।

क्या भीतर भी कोई था ?

अब उसे इमारत में कदम रखना अपनी महामूर्खता लगने लगी थी।

कौन था भीतर ? कोई जानवर या -

दूसरी सम्भावना पर विचार करने के ख्याल से ही उसे दहशत होने लगी।

भीतर फिर आहट हुई।

वह आंखे फाड़-फाड़कर गलियारे में देखने लगी।

यह उसकी खुशकिस्मती थी कि गलियारे में वह दो कदम और आगे नहीं बढ़ आई थी वर्ना धोते के साथ-साथ उसका काम तमाम हो जाना भी लाजमी हो जाता।

गलियारे के सिरे पर विशाल हाल था और हाल से पार फिर गलियारा था। उस परले गलियारे में वर्षा को एक साया दिखाई दिया। अन्धेरे में वर्षा यह न समझ सकी कि उसकी तरफ साये का मुंह था या पीठ थी।

“हो गया काम ?” - पिछले गलियारे से एक दबी हुई आवज आई।

“हां।”

“तो फिर हिलता क्यों नहीं यहां से ?”

“मैं देख रहा था कि इसका क्या हाल है ?”

“अब इसका हाल इसका बनाने वाला देखेगा। इसे छोड़ और चल यहां से। यहां एक सैकेण्ड भी फालतू ठहरना मूर्खता होगी।”

“अच्छा।”

तब वर्षा को पहले साये के साथ एक और साया दिखाई दिया। एक मोटा और ठिगना और दूसरा पतला और लम्बा।

मन मन के पांव उठाती वर्षा वापिस वरामदे में आ गई और एक खम्बे के पीछे सांस रोककर खड़ी हो गई।

बाहर सड़क पर टोपी वाला साया अब मौजूद नहीं था। या वह कहीं छुप गया था और या वह आगे बढ़ गया था।